Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

आधुनिक शिक्षा और तंत्रज्ञान

डॉ.एस.आर. नंदनूरवाले
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
सरस्वती भुवन विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में उच्च शिक्षा क्षेत्र में तिव्रता से विकास हुआ लगभग पाँच लाख प्राथमिक पाठ्यशालाएँ, 50 हजार उच्च प्राथमिक, 15 लाख शिक्षा संस्थाएँ, 50 लाख अध्यापक, प्राध्यापक, 20 करोड छात्र प्रतिदिन शिक्षा ग्रहण करते हैं । 5 हजार करोड रूपये प्रतिवर्ष शिक्षा पर खर्च होकर भी आज शिक्षा के संदर्भ में हम पूर्णतः संतुष्ट नहीं है। इसका कारण शिक्षा की विविध पद्धतियों में बदलते परिवर्तन के साथ ही बदलाव आना अनिवार्य है।

आज हम गर्व से कह रहे हैं कि यह युग "टेक्नोट्रॉनिक" युग है। इस नये सहस्त्रक के संगणक तथा इन्फर्मेशन टेक्नॉलॉजी का उदय हो गया है। इस टेक्नॉलॉजी की जानकारी या अर्थ कितने शिक्षक जानते हैं । इस संदर्भ में जानकारी या अर्थ कितने शिक्षक जानते हैं। इस संदर्भ में जानकारी होना प्राथमिक आवश्यकता है। शिक्षकों को इंटरनेट साक्षर होने के लिए उसकी कार्यप्रणाली जानना अत्यंत आवश्यक है। विविध अनुसंधानों आविष्कारों द्वारा हमने बहुत बड़ी प्रगति की है। नये नये तंत्र खोज निकाले हैं। घन्टों की बाते मिन्टों में करनेवाले चाँद पर पहुँचनेवाले हम प्रकृति के एक जबरदस्त धक्के से गुजरात को बचा नहीं सके आखिर आकाश पर पहुँचनेवाले आधुनिक तंत्रज्ञान को जाननेवाले हमारे हाथ मिट्टी के निकले शिक्षा और अनुसंधान कर्ताओं ने नये आविष्कारों के साथ इस बात को भी नये तरीके से सोचना चाहिए ।

आनेवाल युग "बौद्धिक युग" के नाम से पहचाना जायेगा। इन्फर्मेशन टेक्नॉलॉजी के कारण नयी शैक्षिक जानकारी सहज रूप से प्राप्त हो रही है। आज शिक्षा क्षेत्र की

असंख्य शाखाएँ स्थापित हो चुकी है। किन्तु मनुष्य को सही साचे में ढालकर उसे आकृत करनेवाली शिक्षा सभी को मिलनी चाहिए । विज्ञान ने बनाये हुए नये आश्चर्यकारक आविष्कारों के अनेक फायदे शिक्षा क्षेत्र को मिल रहे हैं। जिस के कारण आधुनिक शिक्षा प्रसार को प्रेरणा मिल रही है। नयी पिढ़ी यदि सशक्त और सक्षम बन रही है। फिर भी सांस्कृतिक चौखट से बाहर निकलने न पाये इस दृष्टि से हम सभी को प्रयत्नशील होना चाहिए । मनुष्य आकाशपर उँची उडान भर रहा है। किन्तु उसका आर्थिक विकास आजतक नहीं हो पाया । उसकी आत्मशक्ति, इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति तथा क्रिया शक्ति के समन्वय से चेतना शक्ति जागृत होती है। वहाँ पर शिक्षित नयी युवा पिढ़ी तयार होकर आनेवाली हर समस्या का प्रतिकार कररने के लिए समर्थ बनती है।

सामाजिक शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन में छात्रों का बौद्धिक स्तर कितना उँचा है और वह किस विषय में रूचि रखता है। छात्र पर अनिच्छा से कोई भी विषय लादना नहीं चाहिए। बौद्धिक स्तर तथा अध्ययन अक्षमता का परिक्षण करते हुए उस आधार पर उन्हें नये तंत्रज्ञान द्वारा अधिक से अधिक सक्षम बनाने का प्रयास होना चाहिए । 28 नोव्हेंबर 2000 को महाराष्ट्र सरकार द्वारा जी.आर. है। जिसमें बौद्धिक क्षमता की कमी रहनेवाले छात्रों को नौ सुविधाएँ दी गयी है। जिसमें बारहवीं कक्षा तक के छात्रों का विचार किया गया है।

शिक्षा क्षेत्र में शिक्षकी ज्ञान के साथ–साथ आधुनिक तंत्रज्ञान का सहारा लेते हुए अपनी परम्परागत शिक्षा पद्धति में परिवर्तन लाते हुए नये–नये आविष्कारों द्वारा आनेवाली पिढ़ी को विवेक शक्ति, आत्मसंयम, आत्ममंथन, आत्मसंघर्ष, आत्मचिंतन करते हुए त्याग और श्रद्धा छात्रों के मन में जागृत कर सकता है। तभी हम प्रगत भारत का सपना साकार कर सकते हैं।

सामाजिक शास्त्री के अध्यापन की दिशाएँ, योजनाएँ तथा अभ्यासक्रम आधुनिक तंत्रज्ञानद्वारा होना आवश्यक है। क्योंकि अभ्यासक्रम बदलते हैं, किन्तु अध्यापन की पद्धती में कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता । सामाजिक शास्त्रों से जुड़ा व्यावसायिक

अभ्यासक्रम होना चाहिए । व्यावसायिक अभ्यासक्रमों की और छात्रों की दौड़ अधिक होने के कारण हमें भी व्यावसायिक अभ्यासक्रम शिक्षा ही आरंभ करना चाहिए । अत्यंत प्राइव्हेट युनिव्हर्सिटी या विदेशी युनिव्हर्सिटी का युग आ रहा है।

इस टेक्नोट्रॉनिक युग में शिक्षक को भी अपने ज्ञान की दिशाएँ समृद्ध करनी होगी तब तक उसे अपना कार्य और कक्षाएँ समझ में नहीं आयेगी इसलिए शिक्षकों को जागृत रहना होगा । अतः तंत्रज्ञान का भले प्रसार–प्रचार हो जाये । किन्तु छात्र में आमुलाग्र परिवर्तन लानेवाला केवल शिक्षक ही हो सकता चूँकि उसे व्यक्तिगत भावना है। संगणक को व्यक्तिगत भावना नहीं है। अतः आनेवाले युग में बौद्धिकता पर ही राष्ट्र प्रगत बननेवाला है।

संदर्भ ग्रंथ :

1.. शिक्षणातील नवह प्रवाह व नव प्रवर्तन – प्रा.डॉ. जगताप

2. आजचे अध्यापन – लीला पाटील